Q.9: लाइबनीज के अनुसार चिद्बिन्दु (Monads) सिद्धान्त की विवेचना करें।

[What is the doctrine of the Monads according to Leibnitz ? Discuss.]

Ans :→ आधुनिक पाश्चात्य दर्शन में चिद्णु जिसे अंग्रेजी में Monads कहा जाता है और ये ग्रीक शब्द है जो एकतावाचक है। Monad शब्द का प्रयोग ब्रूनो (Bruno) के विचारों में अधिक प्राप्त होता है, लेकिन ब्रूनो के विचारों से भिन्न विचार लाइबनिट्ज दार्शनिक का था। लाइबनिट्ज ने Monad शब्द प्रसिद्ध रासायनिक वान हेलमोन्ट (Van helmount) से लिया था। Van helmount ने ही सर्वप्रथम सरल सूक्ष्म न्यूनतम अवयव को Monad या चिद्णु माना है। लाइबनिट्ज के अनुसार चिद्णु [illegible] के परम सूक्ष्म न्यूनतम विशेष पदार्थ है जो शक्तिसम्पन्न अविनाशक [illegible] है। इसलिए ये चिद्णु ही विश्व के परम द्रव्य है।

[illegible] देकार्त के अनुसार— देकार्त ने सापेक्ष एवं निरपेक्ष रूप से द्रव्य [illegible] प्रकार से माना है।— (i) चित, और (ii) अचित सापेक्ष द्रव्य है। स्पिनोजा के अनुसार द्रव्य केवल एक ही है। ऐसा निरपेक्ष द्रव्य केवल ईश्वर ही है, [illegible] ईश्वर के गुण है। लाइबनिट्ज के अनुसार द्रव्य एक नहीं [illegible] परन्तु [illegible] रूप है क्योंकि ये चिद्णु ही जगत के मूल कारण है। लाइबनिट्ज [illegible] पदार्थों के विस्तार को नहीं मानते है। उनके अनुसार भौतिक पदार्थ [illegible] पदार्थ है। जड़ पदार्थ, शक्ति सम्पन्न है। जड़ पदार्थों में परिणाम या परिवर्तन होता है क्योंकि वह सशक्त है। लाइबनिट्ज के दर्शन में इसी शक्ति का नाम Monad या चिद्णु है।

Monad विश्व के अन्तिम अविभाज्य अवयव है। न्यूनतम भाग होने के कारण इन्हें परमाणु रूप माना गया, परन्तु Monad तथा परमाणु में भिन्नता पाया जाता है। परमाणु भौतिक पदार्थों के अन्तिम अवयव, है अविभाज्य हैं। परन्तु ये भौतिक नहीं, क्योंकि भौतिक होने से उनका विभाजन सम्भव है। परमाणुवादियों से लाइबनिट्ज का विरोध स्पष्ट है। वैज्ञानिक परमाणुओं को तो शक्ति रूप मानते हैं परन्तु अचेतन स्वीकार करते हैं।

Scanned by CamScanner

लाइबनिट्ज के अनुसार परमाणु चेतन है, क्योंकि ये अभौतिक है। इन्हीं अभौतिक, शक्तिसम्पन्न परमाणु रूप (अविभाज्य अवयवों) पदार्थों को Leibnitz Monad कहते हैं। क्योंकि leibnitz के चिदणु शक्तिरूप है। अतः शक्ति ही विश्वरूप का स्रोत है। साथ ही साथ शक्ति ही संसार का परम द्रव्य है। शक्ति विस्तार शून्य है, क्योंकि ये जड़ पदार्थ नहीं है। सरलता तथा अविभाज्यता के कारण शक्ति को मौलिक द्रव्य (Fundamental substance) भी माना गया है। संघात वस्तु की उत्पत्ति तथा विनाश दोनों होते है। उनके कारण शक्ति का नहीं। शक्ति अकारण है, अजन्य है, इसलिए अविनाशी है। यहाँ शक्ति का संकेत Monad के द्वारा सम्बोधित होता है।

परम तत्व (Monad) का संख्या के ... लाइबनिट्ज (Leibnitz) का कहना है कि परम तत्व एक ही ... विश्व में अनेक पदार्थ है तथा सभी पदार्थ शक्ति प्रसूत या शक्तिसम्पन्न है। ... इस प्रकार Leibnitz दार्शनिक के अनुसार परम ... अनेकता की सिद्धि के लिए Leibnitz का कहना ... परीक्षा से शक्ति की अनेकता सिद्ध होती है। अचित् पदार्थ ... क्योंकि इनका विस्तार किसी स्थान में ही सम्भव है ... विस्तृत नहीं हो सकते। प्रत्येक के लिए भिन्न-भिन्न ... की भिन्नता से सिद्ध होता है कि शरीर या आत्मा ... का कारण (शक्तिरूप) Monad भी भिन्न है।

इस प्रकार Monad के स्वरूप की व्याख्या करते हुए Leibnitz कहते है कि चिदणु चेतन परमाणु है। परमाणु कहने से Leibnitz का तात्पर्य है कि Monad विश्व के अन्तिम, अविभाज्य, सरलतम, शक्तिरूप अवयव है। वैज्ञानिकों के अनुसार न्यूनतम, अविभाज्य अवयव ही परमाणु है। परन्तु वैज्ञानिकों के परमाणु अचेतन पदार्थ है। लेकिन Leibnitz के परमाणु चेतन है। इसलिए उनका वैज्ञानिकों से भेद स्पष्ट होते है। लाइबनिट्ज के चेतन परमाणु या चिदणु विश्व की अन्तिम इकाई है। परन्तु ये गणित की इकाई से भिन्न है। गणित की इकाई

इकाई शक्तिहीन निर्जीव पदार्थ है। लेकिन Leibnitz के चिदणु सशक्त

चेतन पदार्थ हैं। गणित की इकाई काल्पनिक है, लाइबनित्ज के चिदणु तात्विक हैं क्योंकि चिदणु ही विश्व के वस्तुतः परम तत्व हैं।

अतः हम कह सकते हैं कि लाइबनित्ज के अनुसार चिदणु के निम्नलिखित रूप हो सकते हैं। जैसे - स्वतंत्र, शक्तिमान, चेतन, विशेष द्रव्य ही ~~चिदणु~~ है परम तत्व है।

इस प्रकार लाइबनित्ज के अनुसार चिद्बिन्दु सिद्धान्त निम्नलिखित है -

i) लाइबनित्ज के अनुसार चिद्बिन्दु (Monad) अनेक हैं। साथ ही साथ चिद्बिन्दु को सरल, अविभाज्य, नित्य, निरपेक्ष, स्वतंत्र अनादि, अनन्त तथा चितशक्ति ~~है~~ माना गया है। उसकी सृष्टि ईश्वर करता है और वही उसका पालन एवं वही उसका संहर्ता भी करता है।

(ii) चिद्बिन्दुओं में गुण का भेद सम्भव है लेकिन परिमाण का भेद नहीं होता।

(iii) चिद्बिन्दु गवाक्षहीन (Windowless) है। गवाक्षहीन होने के कारण न चिद्बिन्दु बाहर से प्रभावित हो सकता है न बाहर को प्रभावित ही कर सकता है।

(iv) प्रत्येक चिद्बिन्दु एक दर्पण की तरह होता है। उसमें अनेक चिद्बिन्दुओं की खुन्दरता होती है क्योंकि उसमें कोई छेद या गवाक्ष नहीं होता है, जैसे जब दर्पण साफ रहता है तब छाया साफ रहती है, जब दर्पण गन्दा रहता है तब बिम्ब अस्पष्ट रहता है। यही बात चिद्बिन्दुओं के साथ पाया जाता है।

(V) प्रत्येक चिद्बिन्दु के दो गुण होते हैं (क) बोध (appetition) और (ख) प्रज्ञा (Perception)। बोधशक्ति के कारण अपनी शक्ति के अनुसार चिद्बिन्दु में ज्ञान उत्पन्न होता है। बोधशक्तियाँ भिन्न हैं। प्रत्येक चिद्बिन्दु में अधिक अधिक ज्ञान अर्जन की प्रवृत्ति होती है। और वह अपूर्ण से पूर्ण होना चाहता है। साथ ही साथ अविकसित चिद्बिन्दु विकास की प्रवृत्ति रखता है।

(Vi) चिद्बिन्दुओं में भिन्न-भिन्न मात्रा में विकास होता है, इसलिए उनकी भिन्न

(04)

भिन्न श्रेणियां है। चिद्‌बिन्दु में जड़ और चेतना आदि नहीं जगती है। जड़ता थोड़ी जागृति होती है। लेकिन चेतना बिलकुल नहीं जगती है। सबसे नीचे जड़ है, जिसकी बोध-प्रवृत्ति सोई हुई रहती है। जड़ का संचालन यान्त्रिक नियमों से होता है। इसके ऊपर वनस्पति-स्तर आता है। इस स्तर में जड़ता थोड़ी कमती है पर चेतना पूरी नहीं जगती। यह स्वप्न की स्थिति है। तीसरा स्तर जागरण का है। इसमें पशु मात्र आते हैं। इनमें संवेदना और चेतना रहती है। इनकी बोध-प्रवृत्ति एक हद तक विकसित होती है। इनकी बोध-प्रवृत्ति को सहजवृत्ति (instincts) के नाम से जाना जाता है। चौथी स्थिति में मनुष्य आता है, जिसे आत्म-चेतना होती है। वह स्वचेतित चिद्‌बिन्दुओं से बना होता है। चिद्‌बिन्दुओं के बीच एक मुख्य चिद्‌बिन्दु रहता है जिसे जीव (Spirit) कहा जाता है। इसमें बौद्धिक ज्ञान मिलता है। यह आत्मबोध की अवस्था है और अन्त में दैविक चेतना (ईश्वर) आती है। इस चेतना में ज्ञान प्रायः सहज आता है। चित्-शक्ति अपनी पराकाष्ठा पर रहती है। इस स्तर की चेतना के ईश्वर, मौलिक चिद्‌बिन्दुओं का बिन्दु (Monad of Monads), सर्वश्रेष्ठ चिद्‌बिन्दु आदि अनेक नाम है।

(vii) प्रत्येक विकास के पीछे एक बाधा शक्ति रहती है। जिसे सूक्ष्म जड़ता (Materia Prima) कहा जाता है। यह जड़ता सभी स्तरों में रहती है। इसका एक ही अपवाद ईश्वर तथा श्रेष्ठतम चिद्‌बिन्दु है। श्रेष्ठतम चिद्‌बिन्दु जड़ता से शून्य, अनन्त श्रद्धा, अनन्त आनन्द, अनन्त ज्ञान तथा अनन्त शक्ति से सम्पन्न होता है। और यह विश्व के अनेक रूपों में विलीन हो जाता है।

इस प्रकार लाइबनिट्ज का चिद्‌बिन्दु सिद्धान्त वास्तव में श्रेष्ठतम चिद्‌बिन्दु है।

लाइबनिट्ज के चिद्‌बिन्दु सिद्धान्त की आलोचना :→ आधुनिक पाश्चात्य दर्शन में लाइबनिट्ज दार्शनिक के चिद्‌बिन्दु सिद्धान्त की आलोचना, लाइबनिट्ज के सिद्धान्त की अन्य दार्शनिक ने अनुभव की वस्तुओं के बीच की क्रिया प्रतिक्रिया की व्याख्या नहीं करता। अन्य दार्शनिक ने कहा है कि गवाक्षहीन अनेक

Scanned by CamScanner

चिद्बिन्दुओं से एकता की स्थापना सम्भव नही। लाइबनिट्ज एकता ते की स्थापना का पूर्व स्थापित सामंजस्य के द्वारा पूरा करना चाहते हैं।

लाइबनिट्ज के दर्शन में तीन मूलभूत सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया गया है।

(i) निरन्तरता का सिद्धान्त (Principal Of Continuety) (ii) व्यक्ति विशेष का सिद्धान्त (Principal of preestablished Harmony) तथा (iii) पूर्व स्थापित सामंजस्य का सिद्धान्त (Principal of Preestablished Harmony)

लाइबनिट्ज के सिद्धान्त की आलोचना करते हुए हीगेल (hegel) दार्शनिक ने कहा है कि चिदणुवाद ~~[illegible]~~ (Monads) का सिद्धान्त अन्य दार्शनिको से भिन्न इसलिए है कि ये ईश्वर को चिदणु का रूप मानते हैं। साथ ही साथ चेतना के द्वारा द्रव्य के मौलिक रूप को प्रधानता देते है तथा जड़ को सत्ता की संज्ञा नही देते है। लाइबनिट्ज के अनुसार यह कहना है कि शरीर या जड़ केवल निम्नकोटि का चिदणु है। ~~चेतना चिदणु का आन्तरिक धर्म है~~ और आत्मा उच्च कोटि का चिदणु है। चेतना चिदणु का आन्तरिक धर्म है साथ ही साथ चेतन और अचेतन दोनों चिदणु के संज्ञा है। यह कहना दोषपूर्ण है, क्योकि चेतन और अचेतन के समस्या को समाधान करने के लिए लाइबनिट्ज दार्शनिक पूर्व स्थापित सामंजस्य के सहारा लेता है।

लाइबनिट्ज का चिदणुवाद उनके दर्शन सबसे महत्वपूर्ण दर्शन है, क्योकि चिदणु चेतन ~~[illegible]~~ परमाणु है। ये विश्व के अन्तिम अवयव है, नित्य तथा अनन्त है। इनके चेतन होने से सम्पूर्ण विश्व चेतन है। अचेतन का कही अस्तित्व नही है। इस प्रकार दार्शनिकों ने इनके चिदणुवाद सिद्धान्त में निम्नलिखित दोष बतलाये है।

(i) लाइबनिट्ज दार्शनिक ने चिदणु को नित्य तथा अनन्त मानते है साथ ही साथ उत्पन्न करने वाला ईश्वर ही है। यदि चिदणु उत्पन्न होते है तो उनका विनाश भी आवश्यम्भावी है।

(ii). विश्व की एकता तथा सामंजस्य की व्याख्या करने के लिए लाइबनिट्ज दार्शनिक पूर्व स्थापित सामंजस्य का ... का प्रयोग करते हैं। यदि चिदणु

गवाक्षहीन है, छिद्ररहित है फिर भी सबके कार्यों में समता है क्योंकि सबको उद्देश्य एक है। यह उद्देश्य ईश्वर द्वारा निश्चित कर दिया गया है। लाइबनिट्ज का यह कहना है कि चिदणु केवल अपने ही आन्तरिक नियमों से परिचालित होते हैं। दूसरी ओर वे चिदणु के अतिरिक्त ईश्वरीय सामंजस्य को स्वीकार कर लेना चिदणु की परतंत्रता स्पष्टतः प्रतीत होती है।

(iii) लाइबनिट्ज ने कहा है कि मूलतः चिदणु एक है। सभी चेतन हैं। परन्तु उनका यह कहना है कि चेतना की भिन्नता के कारण चिदणु के ~~विभिन्न~~ विभिन्न स्तर है इसलिए चिदणु अनेक है।

(iv) लाइबनिट्ज ने अपने दर्शन में कहा है कि विश्व में केवल चिदणु की ही सत्ता है, ~~परन्तु~~ चिदणु के बिना विश्व में कुछ भी नहीं है। साथ ही साथ चिदणु विश्व के दर्पण के समान है। जिसमें पूरा संसार प्रत्येक चिदणु के द्वारा प्रतिबिम्बित साबित होता है। यह कहना उचित प्रतीत नहीं होता क्योंकि किसी वस्तु का प्रतिबिम्बित होना सत्ता से अवयव अलग साबित करता है।

(v) चिदबिन्दुओं के सिद्धान्त में विरोध है। लाइबनिट्ज ने एक ओर चिद् बिन्दु को शाश्वत कहा है। दूसरी ओर ईश्वर द्वारा बनाया ~~गया~~ हुआ कहा गया है। लेकिन अन्य दार्शनिक का यह तर्क है ईश्वर द्वारा बनाये गए चिद बिन्दु शाश्वत नहीं कहे जा सकते हैं।

लाइबनिट्ज ने चिदबिन्दु को सरल, अविभाज्य नित्य है, निरपेक्ष है, स्वतंत्र है, अनादि है, चित शक्ति है, चिदबिन्दु की सृष्टि ईश्वर करता है। वहीं इसका पालन करता भी है, लेकिन इस चिदबिन्दु सिद्धान्त को हम शाश्वत की संज्ञा नहीं दे सकते हैं तथा ईश्वर की संज्ञा नहीं दे सकते क्योंकि ईश्वर के द्वारा चिदबिन्दु का प्रादुर्भाव या उत्पत्ति होता है।

(vi) लाइबनिट्ज ने चिदणु को स्वतंत्र चितशक्ति मानते हैं साथ ही साथ प्रत्येक चिदणु में कुछ जड़ता का अंश भी स्वीकार करते हैं। ~~यदि चिदणु केवल~~ यह कहना सही नहीं है क्योंकि चिदणु केवल चेतन ही है उसमें जड़ता का अंश था। किस प्रकार आ जाता है इसलिए ~~इनको~~ उन का

कहना यह उचित प्रतीत नही होता है। (07)

(VII) लाइबनिट्ज ने चिदणु को सक्रिय और निष्क्रिय दोनो रूप मे माना है क्योकि चिदणु स्वभावतः सक्रिय होता है। लेकिन जड़ता के कारण उनमें निष्क्रियता उत्पन्न हो जाती है। अन्य दार्शनिक का तर्क उचित प्रतीत होता है कि लाइबनिट्ज का चिदणुवाद सक्रिय और निष्क्रिय दोनों नही हो सकता है।

(VIII) लाइबनिट्ज चिदणु का विकास मानते है साथ ही साथ चिदणु का स्वभाव ईश्वर के द्वारा पूर्व नियत भी मानते है। पर कहना सही नही है। क्योकि चिदणु विकास के क्रम मे होता तो उनका स्वभाव नियत नही स्वीकार किया जा सकता।

(IX) लाइबनिट्ज चिदणु को परस्परापेक्ष एक नही मानते क्योकि उनमे आपस मे एक सम्बन्ध स्वीकार करते है। एकतान संगीत से विश्व मे साम्य तथा एकरूपता की और दो घड़ियो के उदाहरण से उन्होने शरीरात्मवाद की समस्या का समाधान किया है। वस्तुतः ये दोनो उदाहरण विश्वगत साम्य और जड़-चेतन सम्बन्ध की व्याख्या नही कर पाते। इसलिए अन्य दार्शनिको का कहना है कि दृष्टांत और दार्ष्टान्त मे भेद है। यह केवल उपमा है, व्याख्या नही।

(X) लाइबनिट्ज का चिदणु को तारतम्यक विकास (Hierarchical order) का रूप मानते है। उनका कहना है कि चिदणु की उच्च श्रेणी निम्न श्रेणी की विकसित अवस्था है। वे इस विकास को क्रमिक बतलाते। लाइबनिट्ज ने क्रमबद्धता नियम (law of Continuity) के आधार सभी चिदणु के क्रमिक विकास के स्तर है का रूप मानते है। सभी अपने स्व स्तर से सम्बन्धित होते है लेकिन व्यक्ति विशेष नियम (law of Individuality) के आधार पर प्रत्येक चिदणु को व्यक्ति विशेष बतलाते है। उनका कहना है कि यह गलत है कि कोई चिदणु सामान नही है, भिन्न नही है सही उचित प्रतीत नही होता।

इस प्रकार लाइबनिट्ज के चिदणु

(08)

की आलोचना होते हुए भी लाइबनित्ज अपने सिद्धान्त में पक्के अनुयायी है। उनके अनुसार शक्तिहीन विश्व का मूल रूप है। शक्ति के मूल में भौतिक पदार्थ के परमाणु है और चेतन स्वरूप है। इसलिए लाइबनित्ज विश्व के प्रत्येक वस्तु को अंतिम अविभाज्य इकाई चेतन की संज्ञा दी है। ये चिदणु विश्व के न्यूनतम अविभाज्य परमाणु है परन्तु ये जड़ात्मक नहीं क्रियात्मक है।

The End